दस्तक

रवि कुमार जैन 'आतिश'

दस्तक ••• रवि कुमार जैन 'आतिश'



शा'इरी के तेज़ बहाओ में कुछ आवाज़ें ख़ुद को ठहर कर सुनने के लिये मजबूर करती हैं, यह तक़ाज़ा करती हैं कि उन को किसी कोमल धारा की तरह, किसी नर्म एहसास की तरह महसूस किया जाये। ऐसी ही कुछ मुनफ़रिद ग़ज़लें आतिश इंदौरी के क़लम से निकली हैं जिन्होंने अपने अल्फ़ाज़ को बरतने के हुनर के अलावा तख़य्युल के नये रंगों के ज़रिए अपने सहर में मुब्तिला किया है।

शा'इर के यहां रायगानी का पुख़्ता एहसास, फ़िक्र की ताज़गी और मोहब्बत का सलीक़ा पाया जाता है जिस पर वक़्त के साथ और हसीन रंग आने की उम्मीद है। मैं आतिश इंदौरी को उनके इस मजमू'ए के लिये मुबारकबाद देता हूँ

शारिक़ कैफ़ी

22, अगस्त, 2025, बरेली

nayaab BOOKS
NEW DELHI - INDIA

POETRY
₹ 350/-

दस्तक ••• रवि कुमार जैन 'आतिश'

बढ़ती नफ़रतें, घना अंधेरा, घायल परिंदे, मासूम बच्चों की चीख़ें, औरतों की बेहुरमती और दम तोड़ती इंसानियत को जब एक हस्सास इंसान देखता है तो वो बैचेन हो उठता है। तब वो अपना क़लम उठाता है और इन तमाम ना-इंसाफ़ियों को अपने लफ़्ज़ों के ज़रिए मिटाने की कोशिश करता है। फिर यही जज़्बात की तर्जुमानी ग़ज़ल की शक्ल में ढल जाती है।

रवि कुमार जैन 'आतिश' ऐसा ही एक नेक दिल इंसान और हस्सास शा'इर है जिसकी शा'इरी उजालों की मोहताज नहीं है लेकिन वो अंधेरों से डरती भी नहीं है।

वो एक ऐसा शा'इर है जो अपने आसपास बिखरे मंज़रों को समेटकर ग़ज़ल बनाने कि कोशिश करता है और उसमें कामयाब भी हो जाता है। मौजूदा दौर कि ख़ुशबू उनकी शा'इरी में महसूस होती है। ज़िंदगी के दिए ज़ख़्मों की परवाह किए बग़ैर वो अपने अदबी सफ़र की तरफ़ गामज़न हैं।

मैं उनके बुलंद मुस्तक़बिल के लिए दुआ करता हूं कि रवि 'आतिश' का ये मजमूआ उनकी शनाख़्त बने और उनकी ग़ज़ल की रौशनी चार-सू फैले।

फ़रियाद बहादुर
वरिष्ठ शा'इर - इंदौर

इस दौर में इंसानियत के पास जो कुछ असासा बचा है, उसमें सबसे अहम चीज़ ग़ज़ल है। जब भी इंसानियत को कोई चोट पहुंचती है तो सबसे पहली चीख़ या एहतजाज ग़ज़ल का ही होता है। इसकी वजह ये है कि ग़ज़ल कहने वालों में ऐसे सच्चे और अच्छे शा'इर शामिल हैं जिनकी मिट्टी में ख़ुद्दारी और ईमानदारी शामिल है। वे अपनी बात बिना लाग-लपेट के अपने मौलिक अंदाज़ में कहने से कभी ख़ौफ़ज़दा नहीं होते।

वैसे भी किसी शा'इर की पहचान उसकी मौलिकता ही होती है।

मैं ये बात बिना किसी शक-ओ-शुब्हा के कह सकता हूं कि रवि 'आतिश' की शा'इरी में भरपूर मौलिकता है। मैं इसमें ये बात भी जोड़ना चाहता हूँ कि 'आतिश' का शुमार यक़ीनन उन शु'अरा में नहीं किया जा सकता जो बरसों पहले से कही जा रही बातों की जुगाली कर रहे हैं। आम शु'अरा की भीड़ से अलग राह इख़्तियार करने वाले रवि 'आतिश' इंदौर कैट संस्थान में वैज्ञानिक हैं। लेकिन इस वैज्ञानिक शा'इर की शा'इरी में समकालीन जीवन की सच्चाइयों के साथ-साथ रूमानियत, दर्द और सामाजिक सरोकारों की अनुगूंज सुनाई देती है।

मैं उनके पहले शे'री मजमूए 'दस्तक' के लिए दिली मुबारकबाद देता हूं और दुआ करता हूं कि उनकी ये पहली दस्तक अदब की दुनिया में दूर तक सुनाई दे। आमीन!!

अखिल राज इंदौरी
(पत्रकार-लेखक-शा'इर)

दस्तक

डॉ. रवि कुमार जैन 'आतिश'

Nayaab BOOKS
NEW DELHI - INDIA

Rs.350/-
ISBN : 978-93-94526-61-1

Dastak by Dr. Ravi Kumar Jain 'Aatish'
(ravikumarjain@gmail.com & +91 9406630247)

नायाब बुक्स
237-238/10 ग्राउंड फ्लोर, राजा राम मार्किट, पुष्पा भवन,
साउथ दिल्ली, नई दिल्ली -110062
फ़ोन : 91 9910482906 / 7289951262 (WhatsApp)
E-mail: nayaabooks@gmail.com
www.facebook.com/nayaabbooks
(Nayaab Books, an imprint of MyBook Select Publishing)

लाड़ली बेटियाँ—
मनु
और
मीरा
के नाम

अपनी बात

ज़िंदगी में कुछ लम्हे ऐसे भी आते हैं जो कहे नहीं जाते — बस जिए जाते हैं, महसूस किए जाते हैं। "दस्तक" भी कुछ वैसे ही लम्हों की आवाज़ है।

इन पन्नों में मोहब्बत भी है, जुदाई भी है। कुछ सवाल हैं, कुछ बातें हैं। कभी गाँव की मिट्टी की सोंधी ख़ुशबू मिलती है, तो कभी शहर की गर्द में उलझी सांसें। कहीं माँ-बाप की परछाईं चलती दिखती है, तो कहीं दोस्ती की खट्टी मिठास।

"दस्तक" दरअस्ल एक तलाश का नाम है — तलाश उस सुकून की, उस जगह की जहाँ हम थोड़ी देर के लिए ठहर सकें|

मैं नहीं जानता कि इसमें कुछ बड़ा है या नया — पर जो कुछ भी है, वो मेरा है, अपना है। जो देखा, जिया, जो अंदर गूंजता रहा — उसी को कहने की एक ईमानदार कोशिश है ये किताब।

अगर कोई शे’र आपको थोड़ी देर के लिए रोक ले, कोई मिसरा सोचने पर मजबूर कर दे, या कोई लफ़्ज़ आपके अंदर हलचल पैदा कर दे — तो मैं समझूँगा कि मेरा लिखना कामयाब रहा।

आपका

—**आतिश**

समय से रू-ब-रू करवाती ग़ज़लें

मेरी आँखों का जाला छट रहा है
दिखेगा सच कि कुहरा छट रहा है

ऐसे शे'र पढ़ने पर लगता है कि शा'इर को वह सच अब दिखने लगा है जो एक कृत्रिम कुहरा पैदा करके दबा दिया गया था। लेकिन सच कभी दबता या छुपता है क्या? बकौल कृष्ण बिहारी नूर-

सच घटे या बढ़े तो सच ना रहे
झूट की कोई इंतिहा ही नहीं

झूट का कुहरा जब फैलाया जाता है तो थोड़ी देर के लिए सच इसके पीछे दबा दिया जाता है लेकिन वह कुहरा छँटते ही सच फिर मुस्कुरा कर और सर उठा कर खड़ा हो जाता है। बहरहाल, युवा शा'इर आतिश का यह शे'र उनकी दृष्टि के बारे में आश्वस्त करता है। हालाँकि युवा आतिश पर अभी मोहब्बत का दौर तारी है और उनके बहुत से अश'आर में इश्क़ सर चढ़ कर बोलता है-

पंछी से आसमान लोगे क्या
जान-ए-मन पूरी जान लोगे क्या

हिस्से में आता सिर्फ़ अमीरों के
इश्क़ पैसों में गर बिका होता

ख़ुद चलो रास्ता नहीं चलता
इश्क़ में पैंतरा नहीं चलता

इश्क़ का रोग हो गया जब से
ख़ुद को ख़ुद का पता नहीं लगता

अब मोहब्बत में साफ़गोई भी ज़रूरी है तो आतिश का शा'इर भी इसी साफ़गोई से बात करता है -

बड़ी गाड़ी से आया इसलिए हूँ
पता है यह तुम्हे क्या देखना है

मरासिम बनाना जितना मुश्किल होता है उस से ज़ियादा मुश्किल होता है उसे ख़ुद भुलाना, लेकिन आतिश का शा'इर कहता है -

वो लड़का वास्तव में मुझ से अच्छा है
तेरे रस्ते से मैं हटता नहीं वरना

पिछले कुछ समय में इस युवा शा'इर ने सोशल मीडिया, जिसमें फेसबुक, यूट्यूब और ट्विटर शामिल हैं, पर अपनी विशेष जगह बनाई है। अब उनकी ग़ज़लों का यह मज्मू'आ "दस्तक" मंज़र-ए-आम पर है।

आज हमारा समय ऐसा हो गया है कि या तो हम रिश्ते निभाना नहीं चाहते या हम से निभ नहीं पा रहे। लेकिन यह तो निश्चित है कि रिश्ते तो निभाने से ही निभते हैं, बावजूद इसके कि कोई रिश्ता तोड़ भी ले, तब भी, इस लिए शा'इर कहता है -

तुमको जब मेरी इतनी चिंता थी
मुझसे रिश्ता बहाल कर लेते

अब रिश्ता बहाल करना एक बात है लेकिन किसी नए रिश्ते को बनाना दूसरी बात। जब आप एक नया रिश्ता बनाने जा रहे हैं तो

परखना होता है, आतिश का शा'इर भी किसी को अपना बनाने से पहले ही परख लेता है -

उसने गिरगिट से रंग बदले हैं
उसको अपना नहीं बना सकता

ज़रूरी भी है परखना। कोई शा'इर है सिर्फ़ मोहब्बत के सहारे शा'इरी को नहीं साध सकता, वह भी तब, जब समय और समाज के बहुत से मसाइल हैं। बक़ौल फ़ैज़ -

और भी दुख हैं ज़माने में मोहब्बत के सिवा

और ये तमाम मसाइल आतिश को भी वैसे ही परेशान करते हैं जैसे दूसरे संवेदनशील शाइरों को। दरअस्ल हर समय में समाज में कोई ना कोई समस्या रही है - निज से लेकर सार्वजनिक जीवन तक। शहर की बेचैनी या सत्ता का नाकारा-पन, राजनैतिक परिदृश्य, सामाजिक विडम्बनाएं इत्यादि सभी किसी भी प्रकार के सृजन के लिए विषय वस्तु बनते हैं। हालांकि ये मुद्दे पुराने ही हैं पर नए-नए तरीक़े से ग़ज़लों में आते हैं। आतिश का शा'इर भी इन सबके लिए फ़िक्र-मंद है -

पेड़ की थोड़ी छाँव ले आना
शहर लौटो तो गाँव ले आना

बात करनी है गर ग़रीबी की
शाह को नंगे पाँव ले आना

अर्थशास्त्र का एक कथन है - बुरी मुद्रा अच्छी मुद्रा को चलन से बाहर कर देती है। ऐसे ही यदि खोटे सिक्के को बाज़ार में चलाना हो तो खरे सिक्के को बाज़ार से बाहर करना पड़ेगा –

खोटे सिक्कों का जब होता है क़ब्ज़ा बाज़ारों पर
'ऐब लगाये जाते हैं तब सोने के कल्दारों पर

इस शे'र के बहाने वर्तमान राजनैतिक प्रवृत्ति को बे-नक़ाब करते हैं। और फिर वर्तमान राजनैतिक परिदृश्य पर तरह तरह से तंज़ कसते हैं -

जनता के हक़ के बाबत जब सवाल पूछे जाएँगे
तुम भी फ़ौरन तोहमत बाँधोगे पिछली सरकारों पर

एक नया क़ानून बनाकर निपटा देंगे
संसद को सच कहने वाला खटक रहा है

आज हर आदमी अपना एक झंडा और समूह लेकर चलने को तैयार है। कोई इसके लिए लड़ना चाहता है कोई उसके लिए जान लगाना चाहता है। जब किसी ग़लत चीज़ को भी सही साबित कर लेने के बहुत से तर्क मौजूद हैं तो उसके मक़्सद की ठीक से तहक़ीक़ात बहुत ज़रूरी हो जाती है -

इससे पहले हम झंडा थामें
मक़्सद किसका क्या यह देखेंगे

जब एक रसोई में बहुत से बर्तन हों तो टकराएँगे भी, आवाज़ भी होगी और टूटेंगे भी। यही बात भारतीय समाज के बारे में भी कही जा सकती है जहाँ बहुत से धर्म सदियों से साथ रहते आए हैं। स्वभावत: ज़ियादा-तर लोग सहिष्णु ही होते हैं पर कट्टरता भी तो कुछ में होगी ही। लेकिन आतिश का शा'इर एक तरफ़ एक कबीराना चरित्र ढूंढता है - ना काहू से दोस्ती ना काहू से बैर -

बैठे मस्जिद पे या मंदिर पे ये उसकी मर्ज़ी
मैं कबूतर को उड़ाऊँगा चला जाऊँगा

और दूसरी तरफ़ सवाल करता है -

आप अटके शिया और सुन्नी में
फिर ख़ुदा के क़रीब कैसे हो

यहाँ यह सवाल जायज़ हो ही जाता है - फिर ख़ुदा के इतने क़रीब कैसे हो? क्योंकि ख़ुदा ने अगर दुनिया को बनाया तो बाँटने के लिए तो नहीं ही बनाया होगा, लेकिन ऐसा हो तो रहा है -

बताया यह था कि जन्नत में भेजेंगे
किसी आतंकी की तक़दीर पहना दी

चिंता करने के लिए जितने मसाइल परिवार के बाहर के हैं उतने ही परिवार के भीतर के भी हैं। एक माँ जो अपने बेटों पर निर्भर है, उसकी फ़िक्र करने वाले किसी बेटे की भी एक फ़िक्र है -

माँ दवा दारू तेरी कैसे कराऊँ
कहती है बीवी कि बेटे और भी तो हैं

लेकिन माँ तो माँ है ना -

मु'आफ़ी माँ ने दे दी ख़्वाब में आकर
मगर सर से पशेमानी नहीं जाती

निश्चित ही यह शे'र परेशान करते हैं लेकिन कुछ शे'र सुकूँ भी देते हैं -

छत पर रख लो तुम भी पानी
पानी में फिर चाँद को घोलो

मैं तौबा दोस्ती से कर तो लूँ लेकिन
हमेशा पीठ पे ख़ंज़र नहीं आया

समय परिवर्तनशील है, कुछ मुद्दे वही होते हैं, कुछ और जुड़ जाते हैं। यहाँ एक पुरानी कहावत याद आती है - मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। अब स्वाभाविक है कि सामाजिक प्राणी है तो समूह में भी रहेगा किंतु आज जीवन का संघर्ष इतना बढ़ गया है कि कमाने की

होड़ में पड़ोसी को पड़ोसी का पता नहीं। इसीलिए आतिश कहते हैं –

गाँव को अब महानगर समझो
हादसों का पता नहीं चलता

जब पड़ोसी सड़ी बदबू से परेशाँ होंगे
तब कहीं जा के मेरी लाश बरामद होगी

अब यहाँ लाश जैसे शब्द को लेकर सोचा जाए तो आतिश का शा'इर रवायती शा'इर है। उसकी ग़ज़लों की भाषा तो रवायती है ही, विषय वस्तु का ट्रीटमेंट भी रवायती ही लगता है। और ऐसा ज़ियादा-तर अश'आर में देखा जा सकता है -

समुंदर कितना गहरा देखना है
उसे अब कह के दरिया देखना है

एक छोटी सी है मेरी दरख़्वास्त
पीठ पर वार मत किया कर यार

सच्चे को झूटा झूटे को सच्चा कह नहीं पाओगे
आईनों की सोहबत से ख़ुद आईना बन जाओगे

अब दूसरी तरफ़ उनकी शा'इरी में कुछ प्रयोग भी देखें जा सकते हैं -

चली जाती है हँसने और हँसाने से
दवा खाने से बीमारी नहीं जाती

रो दिए मेरे हाल पे पंछी
चुगने जब सिर्फ़ बाजरा रक्खा

डाँटना बंद कर दिया तुमने
दूध जैसा उफान लोगे क्या

एक कटपीस मुफ़्त में ले लो
पूरे का पूरा थान लोगे क्या

सलवार-सूट से टॉप-जींस तक जाना मुश्किल होता है
ख़ुद की खींची क़ैदों से बाहर आना मुश्किल होता है

चाँद का ख़्वाब सजा के बैठे हैं
घर में साँकल लगा के बैठे हैं

जब से पंखे उतार फेंके हैं
स्टूल और रस्सियाँ नहीं आती

तवाइफ़ से चुरा लाया हूँ घुँघरू
अमीरी को नचाना चाहता हूँ

दुनिया देखी कब बच्चों ने
सी सी प्लस प्लस जावा देखा

बहुत पेपर पे छपने हैं तो ठप्पा काट लेते हैं
पिताजी मर गये हैं तो अंगूठा काट लेते हैं

बहरहाल, शा'इर है, हमारे समाज की चिंताओं को व्यक्त करना उसकी अहम ज़िम्मेदारी है। लेकिन शा'इर है तो एक नई और दुनिया का ख़्वाब भी मुसलसल देखता है -

एक दुनिया वहाँ बसानी है
शख़्स तन्हा जहाँ नहीं होता

बहरहाल, अपने पहले मजमू'ए के साथ एक नए शा'इर की किताबों की दुनिया में आमद हो रही है, जिसका इस्तक़बाल किया जाना चाहिए। उम्मीद है यह ग़ज़लें पाठक समाज को अपने समय से रू-ब-रू करवाएँगी।

—**प्रदीप कान्त**

शे'रियत का नया रंग

आतिश इंदौरी उर्फ़ डॉ रवि कुमार 'आतिश' हिंदी ग़ज़ल का जाना पहचाना हुआ नाम है। पेशे से वैज्ञानिक होने के साथ सृजन की इस ख़ूबसूरत विधा को साधने में भी कमाल करते हैं। वे पेड़ की छाँव के साथ गाँव को शहर लाना चाहते हैं, तो जो गिरगिट सा रंग बदलता है उसे अपना नहीं बना सकते और समुंदर की गहराई नापने के लिए उसे दरिया कह कर देखते हैं। उनकी ग़ज़लों का हर अश'आर जीवन से रचा-बसा है। जो सौंदर्य प्राप्त करते हैं वह जीवन मूल्यों से आयत होता है। उनकी भाषा सहज और सरल बोल-चाल की भाषा है लेकिन जब उनके अश'आर भाव में खुलते है तब एक व्यापक सरोकार की तरफ़ खुलते हैं। अगर बाप है तो तुम ग़रीब कैसे, दिखेगा सच कि कुहरा छट रहा है, ख़ुद चलो रास्ता नहीं चलता और बैठे मंदिर पर या मस्जिद पर उसकी मर्ज़ी जैसे सार्थक कथ्य से भरे इन शे'रों में नवाचार पर्याप्त है। आतिश बिना किसी हो हल्ला के चुप-चाप रचने में विश्वास रखते हैं। यह उनकी सादगी है जो पाठकों को जोड़ लेती है। उनकी शा'इरी एक तरफ़ तो देश के प्रतिष्ठित पत्रिकाओं में छप रही है तो दूसरी तरफ़ गायक गाकर लोकप्रिय हो रहे हैं। सोशल मीडिया और संजाल पर तो वह चुनिंदा शा'इर की तरह से उपलब्ध हैं। यह शा'इर नवोदित होकर भी नवोदित नहीं है। मुझे पूरा विश्वास है कि इस किताब को पढ़ कर पाठक संतुष्ट होंगे। यह किताब न केवल पठनीय है बल्कि संग्रहणीय भी है।

—**प्रदीप मिश्र**

फ़ेहरिस्त

●

पेड़ की थोड़ी छाँव ले आना
शहर लौटो तो गाँव ले आना

बात करनी है गर ग़रीबी की
शाह को नंगे पाँव ले आना

वे विराजें तो राम-राज आये
राम जी की खड़ाँव ले आना

जो भी लाओ धमाल से लाओ
मौत बस हल्के पाँव ले आना

ज़ीस्त की जब बनानी है तस्वीर
धूप ले आना छाँव ले आना

●●●

●

समुंदर कितना गहरा देखना है
उसे अब कह के दरिया देखना है

गया था पेड़ से ख़ुद टूटकर जो
कहाँ पहुँचा वो पत्ता देखना है

बिछड़ने का सबब पढ़ना है मुझको
तेरा इक बार चेहरा देखना है

पुकारूँगा मगर आना नहीं तुम
मुझे ता-उम्र रस्ता देखना है

बड़ी गाड़ी से आया इसलिए हूँ
पता है यह, तुम्हे क्या देखना है

●●●

●

ख़ुद को बीमार मत किया कर यार
डूब कर प्यार मत किया कर यार

जब मदद माँगे कोई ग़ैरतमंद
तब तो इंकार मत किया कर यार

एक छोटी सी है मेरी दरख़्वास्त
पीठ पर वार मत किया कर यार

ख़ुद के खाने के लाले पड़ जाएँ
इतना उपकार मत किया कर यार

इसको जाना जहाँ है जाने दो
दिल से तकरार मत किया कर यार

●●●

●

रंग गालों पे लगाऊँगा चला जाऊँगा
थोड़ा सा तुझको सजाऊँगा चला जाऊँगा

तेरी ही तरह मैं हैरान करूँगा तुझको
दे के आवाज़ बुलाऊँगा चला जाऊँगा

बैठे मस्जिद पे या मंदिर पे ये उसकी मर्ज़ी
मैं कबूतर को उड़ाऊँगा चला जाऊँगा

क्यूँ परेशान हो हिस्सा नहीं माँगूँगा मैं
आसमाँ सर पे उठाऊँगा चला जाऊँगा

इतना पक्का है कि एहसान नहीं लूँगा मैं
मौत को ख़ुद ही बुलाऊँगा चला जाऊँगा

●●●

●

ख़ुद को सस्ता नहीं बना सकता
मैं तमाशा नहीं बना सकता

राब्ता सिर्फ़ दो से बाक़ी है
और अच्छा नहीं बना सकता

सब लकीरें हैं हाथ की टेढ़ी
सीधा रस्ता नहीं बना सकता

उसने गिरगिट से रंग बदले हैं
उसको अपना नहीं बना सकता

ख़ूब पैसे बनाए हैं लेकिन
एक क़तरा नहीं बना सकता

●●●

●

चैन पाने के लिए मैंने लगा रक्खी है
ज़िंदगी तूने बड़ी गंध मचा रक्खी है

जितने आते हैं तुम्हें उतने दिखाओ कर्तब
मैंने आँखों पे हरी पट्टी चढ़ा रक्खी है

चाह कर भी तुझे अपना नहीं सकता हूँ मैं
बद-ख़यालों ने बड़ी भीड़ लगा रक्खी है

हाल है तेरा भी मेरे ही सरीखा शायद
नाव टूटी है मगर पाल चढ़ा रक्खी है

जानता अच्छे से हूँ यह कि ठगा जाऊँगा
मैंने उम्मीद ज़माने से लगा रक्खी है

●●●

●

बात तेरी नहीं समझ सकता
चाह कर भी नहीं समझ सकता

पास जिसके हो बेकअप कोई
बदहवासी नहीं समझ सकता

मुँह में ढेला नमक का है उसके
बात मीठी नहीं समझ सकता

रहता हो जो तवायफ़ों के बीच
वो कहानी नहीं समझ सकता

आशिक़ी-वाशिक़ी की बातों को
इक शिकारी नहीं समझ सकता

●●●

ख़ुदा के घर सड़क कोई नहीं जाती
चलो पैदल वहाँ लारी नहीं जाती

चली जाती है हँसने और हँसाने से
दवा खाने से बीमारी नहीं जाती

मु'आफ़ी माँ ने दे दी ख़्वाब में आकर
मगर सर से पशेमानी नहीं जाती

उसे जाने दिया रोका नहीं मैं ने
कभी उसकी ये हैरानी नहीं जाती

ज़ियादा सोचने से नींद जाती है
मगर इससे परेशानी नहीं जाती

मोहब्बत हो गई तो हो गई 'आतिश'
कभी ये वाली बीमारी नहीं जाती

●●●

●

क्या है ऊँचाई मोहब्बत की बताते जाओ
पंछियों उड़ के यूँ ही ख़्वाब दिखाते जाओ

पेड़ पत्थर का जवाब आज भी देते फल से
चोट खाओ भले पर रिश्ते निभाते जाओ

यूँ भी पैग़ाम मोहब्बत का पहुँच जाएगा
साथ इंसाँ के परिंदों को बसाते जाओ

शहर में काम बहुत सारे समय लेकिन कम
मत करो बात मगर हाथ हिलाते जाओ

थोड़े मत-भेद तो हर घर में हुआ करते हैं
इन को नेता जी हवा मत दो बुझाते जाओ

गाँव में नाव थी काग़ज़ की सफ़र आसाँ था
इक मुसाफ़िर हूँ यहाँ राह दिखाते जाओ

गालियाँ ऐसे ही दो मुझ को हमेशा 'आतिश'
ग़लतियाँ मेरी इसी तरह बताते जाओ

●●●

●

दर्द से दिल ने वास्ता रक्खा
वक़्त बदलेगा हौसला रक्खा

रो दिए मेरे हाल पे पंछी
चुगने जब सिर्फ़ बाजरा रक्खा

धोका अक्सर मिले है अपनों से
अपनों से थोड़ा फ़ासला रक्खा

ताकि निकलें नहीं मिरे आँसू
दर्द सहने का सिलसिला रक्खा

मंदिरों मस्जिदों में ढूँढे कौन
इस लिए दिल में इक ख़ुदा रक्खा

तोड़ देते जो हौसला 'आतिश'
उन ख़यालों से फ़ासला रक्खा

●●●

●

काश मैं तुझ सा बे-वफ़ा होता
फिर मुझे तुझ से क्या गिला होता

इश्क़ होता है क्या पता होता
गर परिंदों से वास्ता होता

बोल के मुझ से गर जुदा होता
मिलने-जुलने का सिलसिला होता

यूँ हो कि घर बनाएँ दीवारें
रात होते ही घर गया होता

बे-वफ़ाई का सुर्ख़ रंग भी है
इश्क़ में वर्ना क्या मज़ा होता

ख़ुद पे गर इख़्तियार होता तो
दूर मैं तुझ से जा चुका होता

हिस्से में आता सिर्फ़ अमीरों के
इश्क़ पैसों में गर बिका होता

●●●

●

यार तुम बद-नसीब कैसे हो
बाप है फिर ग़रीब कैसे हो

आप अटके शिया और सुन्नी में
फिर ख़ुदा के क़रीब कैसे हो

ख़ुद की थाली में छेद कर डाला
यार इतने अजीब कैसे हो

बूढ़े बरगद की छाँव में हो तुम
बेटे फिर ग़म-नसीब कैसे हो

तुमसे पूरी हुई कहानी यह
दोस्त हो तुम रक़ीब कैसे हो

●●●

गाँठें जो हैं वो सब खोलो
जीवन में यूँ मिसरी घोलो

छत पर रख लो तुम भी पानी
पानी में फिर चाँद को घोलो

दीवारों पर दस्तक मत दो
मन मंदिर के कपाट खोलो

हो जाओगे मीठे तुम भी
मीठा-मीठा सब से बोलो

दिल के अंदर इक मंदिर है
गहरे उतरो और पट खोलो

●

आग है पर धुआँ नहीं होता
दिल में क्या है बयाँ नहीं होता

एक दुनिया वहाँ बसानी है
शख़्स तन्हा जहाँ नहीं होता

या तो बचपन है या बुढ़ापा है
बोन्साई जवाँ नहीं होता

दरमियाँ कोई फिर भी होता है
कोई जब दरमियाँ नहीं होता

भीड़ में हूँ तो क्या हुआ 'आतिश'
शख़्स तन्हा कहाँ नहीं होता

●●●

●

सब पुराने ख़याल बदलो यार
वक़्त बदला है साल बदलो यार

मात हर बार थोड़ी खाऊँगा
वक़्त के साथ चाल बदलो यार

एक थप्पड़ अभी लगेगा और
इसलिए अपना गाल बदलो यार

कर नहीं सकती मैं अभी शादी
इसका मतलब सवाल बदलो यार

फिर से इस में नहीं फँसूँगा मैं
इसलिए अपना जाल बदलो यार

●●●

●

इश्क़ गुल का नहीं ख़ुशबू का सफ़र है जानाँ
इक यही बात है जिसका मुझे डर है जानाँ

तुम से मिल के हो गया हूँ मैं तुम्हारे जैसा
इसलिए सिर्फ़ मुझे मेरी ख़बर है जानाँ

सच्चा वा'दा करो मुझसे यूँ ही मत बहलाओ
मसअला यह है कि कमज़ोर नज़र है जानाँ

रास्ता ख़ूब बताते जा रहे हो लेकिन
कहते हैं इश्क़ तो अंजान सफ़र है जानाँ

आपको है ये शिकायत कि वफ़ा कम कर दी
यह असर आपकी सोहबत का असर है जानाँ

●●●

●

कभी मुझसे कोई शिकवा शिकायत ही नहीं करते
यूँ लगता है कि तुम मुझसे मोहब्बत ही नहीं करते

हवाओं की तरह मुझको कहीं भी जाने देते हो
मोहब्बत हूँ तुम्हारी पर हिफ़ाज़त ही नहीं करते

बताओ भी मोहब्बत किस तरह अपनी मुकम्मल हो
मोहब्बत के लिए तुम तो बग़ावत ही नहीं करते

क़रीब आने की कोशिश आपने की ही नहीं जानाँ
तभी तो लगता है मुझको कि उल्फ़त ही नहीं करते

●●●

●

बे-सबब ही इधर-उधर जाता
तुम नहीं होते तो बिखर जाता

फूल की तरह तुम अगर खिलते
इत्र की तरह मैं बिखर जाता

ख़्वाब देखे थे हर जगह हमने
छोड़ कर शहर यह किधर जाता

बात यह है कि यह जुदाई है
हादसा होता तो गुज़र जाता

फिर जुदा होना होता नामुममिन
जिस्म में जिस्म गर उतर जाता

●●●

●

निभाई वफ़ा उम्र भर कज-अदाई नहीं की
ख़फ़ा तो रहा पर कभी बे-वफ़ाई नहीं की

समय ठीक कर दे तो कर दे अलग बात है यह
दिए तुमने जो ज़ख़्म उनकी दवाई नहीं की

मुझे वास्ते जिसके छोड़ा तुम्हें उसने छोड़ा
हँसा जानकर यह मगर जग-हँसाई नहीं की

ग़रीबी हटाओ ग़रीबी हटाओ कहा तो
ग़रीबों के घर में मगर रौशनाई नहीं की

ज़रूरत पड़ी तो हमेशा शहादत दी हमने
किसी शाह की तरह बातें हवाई नहीं की

●●●

●

मेरी आँखों का जाला छट रहा है
दिखेगा सच कि कुहरा छट रहा है

हुए मनभेद थोड़े कम तो देखो
वतन पर आया ख़तरा छट रहा है

दिए में लौ नहीं है शेष फिर भी
दिलों पर से अँधेरा छट रहा है

शफ़क़ दिखने में इक मुद्दत लगेगी
बहुत धीरे कुहासा छट रहा है

दिलों पे खिंच रही है फिर से सरहद
हमारा फिर से शजरा छट रहा है

●●●

●

तू मुझे अब सगा नहीं लगता
इसलिए कुछ बुरा नहीं लगता

यार क्यूँ तूने बे-वफ़ाई की
अब जहाँ में जिया नहीं लगता

काम सारे वो दे रहे हो तुम
मेरा जिनमें हिया नहीं लगता

इश्क़ है अल्पताप जैसा रोग
मौत का कुछ पता नहीं लगता

इश्क़ का रोग हो गया जब से
ख़ुद को ख़ुद का पता नहीं लगता

●●●

●

ज़माना इक जिसे अपना बनाने में लगा है
वही इक शख़्स अब मुझको भुलाने में लगा है

लगे थे एक दो पल और मोहब्बत हो गई थी
ज़माना पर ज़माने को मनाने में लगा है

मोहब्बत को भले कहता है ने'मत ये ज़माना
मोहब्बत को जहाँ से पर मिटाने में लगा है

कोई आशिक़ नहीं है वो तो दीवाना है 'आतिश'
ग़मों से घर क़रीने से सजाने में लगा है

●●●

●

ख़ुद चलो रास्ता नहीं चलता
इश्क़ में पैंतरा नहीं चलता

जिसको जाना है वो तो जाएगा
इश्क़ का वास्ता नहीं चलता

देखिए इश्क़ एक जंगल है
रास्तों का पता नहीं चलता

एक लम्बा समय गुज़रने दो
चार दिन में पता नहीं चलता

गाँव को अब महानगर समझो
हादसों का पता नहीं चलता

●●●

●

चाबियाँ जिसकी मैं बामी में रखूँगा
नफ़रतों को उस तिजोरी में रखूँगा

चाव से सब इस कहानी को सुनेंगे
बे-वफ़ाओं को कहानी में रखूँगा

झूट बोलेगा मगर सच्चा लगेगा
पात्र इक ऐसा कहानी में रखूँगा

बंद हो रस्ता या चाहे आग बरसे
हर समय ख़ुद को रवानी में रखूँगा

यूँ सजाऊँगा मैं माँ की धानी साड़ी
चाँद तारों को किनारी में रखूँगा

●●●

●

चाहता हूँ कि दूजी राह मिले
राह-ए-उल्फ़त में सब तबाह मिले

ज़िद है मेरी वहीं रुकूँगा मैं
उम्र भर को जहाँ पनाह मिले

बे-वफ़ा हो तो भी दुआ ले लो
आपको इश्क़ बे-पनाह मिले

इसलिए बन गया हूँ मैं रहबर
दूसरों को सहीह राह मिले

बे-वफ़ाई नहीं की है मैंने
कहने को पर कोई गवाह मिले

शहर को शहर-ए-इश्क़ कैसे कहूँ
हर जगह मुझको क़त्ल-गाह मिले

●●●

●

पंछी से आसमान लोगे क्या
जान-ए-मन पूरी जान लोगे क्या

कुछ दया कर लो ऐ किरायेदार
मेरा पूरा मकान लोगे क्या

डाँटना बंद कर दिया तुमने
दूध जैसा उफान लोगे क्या

भाव-ताव इतना कर रहे हो तुम
मेरी पूरी दुकान लोगे क्या

बे-वफ़ा क्यूँ बता रहे हो मुझे
आन बान और शान लोगे क्या

एक कटपीस मुफ़्त में ले लो
पूरे का पूरा थान लोगे क्या

ले ली हैं तुमने सारी तस्वीरें
मेरा पूरा जहान लोगे क्या

●●●

●

मेरा इतना ख़याल कर लेते
कोई मुश्किल सवाल कर लेते

इतना मुझ पर नवाल कर लेते
हिज्र का कुछ मलाल कर लेते

तुमको जब मेरी इतनी चिंता थी
मुझसे रिश्ता बहाल कर लेते

उम्र भर के लिए बिछड़ना था
मिल के थोड़ा धमाल कर लेते

यार बोसे में और मज़ा आता
थोड़ा चेहरे को लाल कर लेते

सीधा-सीधा जबाब चाहिए था
सीधा-सीधा सवाल कर लेते

मैं तो ग़म भी नहीं कमा पाया
आप लेकिन कमाल कर लेते

●●●

●

दूर रहिए उबल रहा हूँ मैं
आजकल सच उगल रहा हूँ मैं

ज़िंदगी अपना लेना अब मुझको
तेरे साँचे में ढल रहा हूँ मैं

खोल दो सारे आसमानों को
घोंसले से निकल रहा हूँ मैं

भले तूफ़ान मुझपे तारी है
तेरे जलवे से जल रहा हूँ मैं

दुश्मनों तक तो ठीक था भाई
दोस्तों को भी खल रहा हूँ मैं

दूर से ही सलाम कर लेना
आइना बन टहल रहा हूँ मैं

●●●

●

सच्चे को झूटा झूटे को सच्चा कह नहीं पाओगे
आईनों की सोहबत से ख़ुद आईना बन जाओगे

हरे भरे गाँवों को छोड़ा तो तय है पछताओगे
पत्थर के शहरों में रहोगे तो पत्थर बन जाओगे

चाहत वाला खेला दिल से खेला तो मुश्किल होगी
पागल-वागल हो के दीवारों से सर टकराओगे

आँखें खोलोगे तब ही जानोगे कि जंग जारी है
आँखें मूँदे बैठे रहने से तो मारे जाओगे

सीधी सीधी टक्कर लेना ही होगी जल्लादों से
अब के भी गर चुप्पी साधोगे तो मारे जाओगे

●●●

●

अच्छे से यार देखना है तुम्हें
आख़िरी बार देखना है तुम्हें

हर कोई कहता है तुम्हें तितली
बन के गुल यार देखना है तुम्हें

तोड़ दूँ आँसुओं की हद-बंदी
दर्द का ज्वार देखना है तुम्हें

हाँ न कुछ भी नहीं कहोगे तुम
पूरा बाज़ार देखना है तुम्हें

आया कैसे हूँ देखते यह हो
मेरा मेयार देखना है तुम्हें

●●●

●

एक से बढ़ के एक वादे और भी तो हैं
कैसे बच पाएँगे झाँसे और भी तो हैं

माँ दवा-दारू तेरी कैसे कराऊँ
कहती है बीवी कि बेटे और भी तो हैं

चाहने की वजह यह बिल्कुल नहीं है
इस जहाँ में चाँद-चेहरे और भी तो हैं

तोहमतें इक दूजे पे हम क्यूँ लगाएँ
दूर जाने के बहाने और भी तो हैं

बंद मत करिए पिलाते रहिए मुझको
पास मेरे राज़ गहरे और भी तो हैं

टूटे पैरों से भी नपते हैं हिमालय
हौसला मत तोड़ रस्ते और भी तो हैं

●●●

●

ख़ुद को तू ख़ुद ही तंग मत करना
बद-ख़यालों से जंग मत करना

धन बढ़ाने का देता हूँ मंतर
कभी भी हाथ तंग मत करना

तुम बड़प्पन में घर गँवा बैठे
कहा किसने था जंग मत करना

घर में रह लो मगर निवेदन है
बाद में हमको तंग मत करना

सिर्फ़ रोटी चुराई है साहब
इसलिए अंग-भंग मत करना

नाम लेकर उतार दी फिर से
रंग में फिर से भंग मत करना

मिलना-जुलना ही बंद हो जाए
रास्ता इतना तंग मत करना

●●●

●

दिल में मेरा ख़याल बाक़ी है
माने कुछ तो मलाल बाक़ी है

बढ़िया वाली नहीं पिलाई क्या
दिल में उसका ख़याल बाक़ी है

थोड़ा और सब्र कर लो ऐ यमराज
ख़र्च करने को माल बाक़ी है

पूछना मत कभी समुंदर से
उसमें कितना हुलाल बाक़ी है

थोड़ा सा और गुलाल ले आओ
अभी रंगने को भाल बाक़ी है

●●●

●

खोटे सिक्कों का जब होता है क़ब्ज़ा बाज़ारों पर
'ऐब लगाये जाते हैं तब सोने के कल्दारों पर

क़ब्ज़ा है गर मक्कारों का सत्ता के गलियारों पर
कालिख पुतनी तय है तब सीधे सच्चे किरदारों पर

यूँ तो तेरी पिक्चर चिपकाई सबने दीवारों पर
पर सब भागे बस मैं चला तेरी ख़ातिर अंगारों पर

हाथों में दम-ख़म कम था इस कारण से कश्ती डूबी
सच कुछ भी हो पर दोषारोपण होगा पतवारों पर

अवसर आया है अच्छे लोगों को संसद में भेजो
आँच लगी है आने ज़िंदा रहने के अधिकारों पर

जनता के हक़ के बाबत जब सवाल पूछे जाएँगे
तुम भी फ़ौरन तोहमत बाँधोगे पिछली सरकारों पर

●●●

●

पक्के घर कहने को ही पक्के थे
वे तो कच्चे घरों से कच्चे थे

तब नहीं चलती थी दवा-गोली
हम तो कंगाली में ही अच्छे थे

ज़िंदगी अपनी ख़ुद तबाह की है
मेरे कमबख़्त कान कच्चे थे

तुम तो सच बोल सकते थे भाई
मेरे घर में तो बाल-बच्चे थे

शहर घुसपैठ किस तरह करता
गाँव जाने के मार्ग कच्चे थे

दरमियाँ आ गई हैं दीवारें
घर बसाने से पहले अच्छे थे

●●●

कुछ तो दिक़्क़त है ज़िंदगी के साथ
वरना दुख आते क्यों ख़ुशी के साथ

फूल ने मुझको यह नसीहत दी
ज़िंदगी जीना बे-ख़ुदी के साथ

वक़्त को साँस लेने देता हूँ
मैं नहीं चलता हूँ घड़ी के साथ

यार मेरे लिए ये मुश्किल है
ज़िंदगी जीना बे-दिली के साथ

चाहता था विराट हो जाना
इसलिए चल पड़ा नदी के साथ

●

च्यूँटी काटूँगा गाल काटूँगा
मैं तो पूरा वबाल काटूँगा

तेरी हर एक चाल काटूँगा
मैं मोहब्बत का जाल काटूँगा

तेरे बिन एक दिन नहीं कटता
कैसे मैं पूरा साल काटूँगा

कर रखी हैं मोहब्बतें इतनी
बूढ़ा हो के भी माल काटूँगा

दूसरों से मैं थोड़ा हट के हूँ
हिज्र में भी धमाल काटूँगा

फ़स्ल तुम काट के ले जाओगे
अच्छा मैं बस पराल काटूँगा

हिज्र के बस पहाड़ काटे हैं
कैसे लम्बा विसाल काटूँगा

●●●

●

की कोशिश तो छटा छटता नहीं वरना
अँधेरा ज़ेहन से हटता नहीं वरना

हमारे काम तो दीवानगी आई
मोहब्बत का सफ़र कटता नहीं वरना

मुझे भाई तेरी आँखों की सच्चाई
किसी और वजह से पटता नहीं वरना

वो लड़का वास्तव में मुझ से अच्छा है
तेरे रस्ते से मैं हटता नहीं वरना

बिगड़ते काम बनते देखे हैं मैंने
तुम्हारा नाम मैं रटता नहीं वरना

●●●

●

मुश्किलों से भरे हालात की इक हद होगी
क्यूँ परेशान हो ख़ुशियों की भी आमद होगी

जब पड़ोसी सड़ी बदबू से परेशाँ होंगे
तब कहीं जा के मेरी लाश बरामद होगी

लिखते रहते हो जो भी उसको तो मानो अभ्यास
जब वो चाहेगा तभी शे'र की आमद होगी

मेरी तक़दीर में दर्दों के सिवा कुछ नहीं है
झूट मत कहिए कि ख़ुशियों की भी आमद होगी

कौन सच्चा है अगर ये नहीं देखा बेटे
आपकी लाश भी टुकड़ों में बरामद होगी

●●●

●

ध्यान इतना ज़रूर रखते हैं
बद-ख़यालात दूर रखते हैं

नूर हम तो ज़रूर रखते हैं
आप पर कोह-ए-नूर रखते हैं

हम बना लेंगे बढ़िया सा माहौल
हम भी भाई सुरूर रखते हैं

दोस्त हम लोग हैं ग़ज़ल वाले
बोलने का शु'ऊर रखते हैं

भले बंदूक़ लाइसेंसी हो
लोग कट्टा ज़रूर रखते हैं

दिल परेशान तब नहीं करता
ख़ुद को जब चूर-चूर रखते हैं

●●●

●

जिसकी जैसी समझ वहीं पहुँचे
लोग तह तक मगर नहीं पहुँचे

बे-वफ़ाओं की बात क्या कीजे
वे अभागे कहीं नहीं पहुँचे

क्या सुनाएँ व्यथा बुढ़ापे की
घर पहुँच के भी घर नहीं पहुँचे

तोड़ कर जिनसे आए थे रिश्ते
घूम फिर कर मगर वहीं पहुँचे

रूह की बात कर रही थी मैं
आप लेकिन सही नहीं पहुँचे

●●●

●

मेरे जैसे नमूने रख रखे हैं
मदारी ने जमूरे रख रखे हैं

कहाँ बच्चे का इक से मन भरा है
बहुत सारे खिलौने रख रखे हैं

मैं इनके सामने सच ही कहूँगा
इन्होंने कच्चे चिट्ठे रख रखे है

मेरी हालत इसी से जान लो तुम
ज़रूरी काम-अधूरे रख रखे हैं

कहाँ से बचते रिश्ते और नाते
ज़बानों में सरौते रख रखे हैं

●●●

●

सलवार-सूट से टॉप-जींस तक जाना मुश्किल होता है
ख़ुद की खींची क़ैदों से बाहर आना मुश्किल होता है

धीरे-धीरे से इस कारण लम्हों को पीता हूँ जानाँ
कितना तेरी बाँहों में वापिस आना मुश्किल होता है

दरिया तो सागर से ऐसे-वैसे करके मिल ही लेगा
लेकिन मिल जाने पर मीठा रह जाना मुश्किल होता है

छुपके-छुपके तकने का कारण यह ही होगा जान-ए-जाँ
चोरों का दरवाज़ों से अंदर आना मुश्किल होता है

इक मुद्दत के बाद कहीं तुमको बिसरा पाया था जानाँ
गहरे सदमों से जल्दी बाहर आना मुश्किल होता है

●●●

●

माँ-पिताजी नहीं रहे जब से
यार घर घर नहीं रहा तब से

मौत दे दो मुझे नया पैकर
लाश को ढो रहा हूँ मैं कब से

ख़ुश नज़र आ रहे हो तुम तो यार
मैं परेशान यूँ ही था कब से

कुछ ज़ियादा ही देर कर दी यार
दे रहा था सदा तुझे कब से

खोने का डर सताने लगता है
बात तुम मत किया करो सब से

●●●

●

कोशिश तो की लेकिन भुला नहीं पाए
एक यही वा'दा हम निभा नहीं पाए

धरती बंजर नहीं थी हम ही बंजर थे
दूजा कोई रिश्ता उगा नहीं पाए

पाई हमने भी थी मोहब्बत की दौलत
हम सोना-चाँदी पर पचा नहीं पाए

बाद में सबको इसका मलाल होता है
माता-पिता का क़र्ज़ा चुका नहीं पाए

क्या करता वो तो चारागर भी निकला
पीड़ा अपनी उससे छुपा नहीं पाए

●●●

●

मुझको तो तेरी हीर बनना था
तुझको पर मेरी पीर बनना था

बे-वफ़ाई ही अच्छी कर लेते
इक मुकम्मल नज़ीर बनना था

मैं लगा था ख़ुदा बनाने में
पर तुझे मेरी पीर बनना था

गुल ही था दिल में आने के पहले
बाद में उसको तीर बनना था

उसने तो राज-पाट छोड़ दिया
मुझको जिसका वज़ीर बनना था

●●●

●

चाँद का ख़्वाब सजा के बैठे हैं
घर में साँकल लगा के बैठे हैं

संग को ख़ुदा बना के बैठे हैं
धूप में दिया जला के बैठे हैं

मुक़ाबला गेंदे के फूल से है
गुलाब ख़ुद को सजा के बैठे हैं

गहरी काली रात बितानी है
हम तो हिया जला के बैठे हैं

दिल को याद उसकी मत दिलवाओ
मुश्किल से चुप करा के बैठे हैं

फ़ोन कहाँ आता है तुम्हारा अब
ख़ुद को ख़ुद ही मना के बैठे हैं

●●●

●

इक तो हस्ती को तेरे जैसा बना बैठे हैं
फिर भी इल्ज़ाम है हम पर कि भुला बैठे हैं

हम तो रोते ही हैं उसको भी रुला बैठे हैं
इश्क़ वाला उसे भी रोग लगा बैठे हैं

रोज़ दोहराता हूँ मैं साथ बिताए लम्हात
उनको फिर भी है शिकायत कि भुला बैठे हैं

अब चमत्कार कोई हमको बचा पाएगा
ख़ुद को तल-हीन समुंदर में डुबा बैठे हैं

बाग़ में हमको खिलाने थे मोहब्बत के फूल
झाड़-झंखाड़ उदासी के उगा बैठे हैं

●●●

●

जितनी दिखती है उतनी हरियाली नहीं है
पिछड़ो की बस्ती तुमको दिखलाई नहीं है

सागर में है दरिया में गहराई नहीं है
बात ये झूटी है इसमें सच्चाई नहीं है

अदालतें माना रात को भी खुल जाती हैं
असली मुद्दों की लेकिन सुनवाई नहीं है

जिनको लूटा गया है उनसे जाकर पूछो
इतिहास की किताबों में सच्चाई नहीं है

इक दो क़ौमों के वोटों से ही जीते हो
तुमने बहुमत से सरकार बनाई नहीं है

●●●

●

एक मुद्दत हो गई यार चले भी आओ
एक मुद्दत रहा है प्यार चले भी आओ

ज़िंदगी साथ तुम्हारे थी तो थी इक त्योहार
हिज्र ने समझा दिया यार चले भी आओ

कुछ कहा तो नहीं दीवार उठा ली लेकिन
अब गिराओ भी ये दीवार चले भी आओ

अक़्ल गर होती तो क्यूँ शर्त लगाता तुमसे
जीत कर भी गया हूँ हार चले भी आओ

जो परेशाँ हैं तुम्हें उन पे तरस आता है
जान-ए-जाँ मैं भी हूँ बीमार चले भी आओ

●●●

●

धरती चटक रही है माथा चटक रहा है
दस्तावेज़ों में पर पारा लुढ़क रहा है

एक नया क़ानून बनाकर निपटा देंगे
संसद को सच कहने वाला खटक रहा है

दया करो मत फेंको भाई तीर चुनावी
देश का इससे ताना-बाना दरक रहा है

घर-घर पानी पहुँचाने का वा'दा कर के
कुओं में तालाबों में पत्थर पटक रहा है

मुफ़्त ये देंगे वो देंगे पर मत ललचाओ
गाजर नहीं है भाई काँटा लटक रहा है

●●●

●

वैसी मुझमें भी नज़ाकत न हो मुमकिन ही नहीं
उसको भी मुझसे मोहब्बत न हो मुमकिन ही नहीं

जब मोहब्बत की हवाओं के पड़ेंगे झोंके
तन-बदन में कोई हरकत न हो मुमकिन ही नहीं

जान-ए-जानाँ चुना है हम ने मोहब्बत का सफ़र
इस सफ़र में कोई दिक़्क़त न हो मुमकिन ही नहीं

आपके होने से बिखरी है मोहब्बत हर-सू
आपके हाथ में बरकत न हो मुमकिन ही नहीं

उम्र भर राह वगरना नहीं तकते आशिक़
मौसम-ए-हिज्र में लज़्ज़त न हो मुमकिन ही नहीं

●●●

●

नंबर बदला घर बदला दफ़्तर बदला
उसने ख़ुद को गिरगिट से बढ़-कर बदला

पहले तो उसने मुझको जी-भर बदला
फिर उसने मन बदला और दिलबर बदला

उसने दीवारें बदली छप्पर बदला
मैं तो ध्यान में उतरा और अंबर बदला

मंज़िल मैंने समझी उसने मक़ाम बस
अगले सफ़र पे निकला तो रहबर बदला

अवसाद से तू ही बाहर ला सकता है
तेरी इक समझाइश ने मंज़र बदला

●●●

●

टूटे दिल से ये हिमाक़त नहीं हो पाएगी
पहले जैसी वो मोहब्बत नहीं हो पाएगी

एक बिखरे हुए दिल को है समेटा हमने
फिर से तोड़ा तो मरम्मत नहीं हो पाएगी

बे-वफ़ा यूँ नहीं है सिर्फ़ तुम्हें खोया है
अब किसी से भी मोहब्बत नहीं हो पाएगी

धड़कनें बिन तेरे भी चलती रहेंगी माना
पहले जैसी तो तबी'अत नहीं हो पाएगी

देखकर आपको मचले न तबी'अत मेरी
इतनी तो मुझसे शराफ़त नहीं हो पाएगी

●●●

●

रिश्ते और टूटेंगे गर हम जाएँगे गहराई में
अच्छा यह है कि पक्का धागा डालें हम तुरपाई में

इस कारण से पूरे तन-मन-धन से तुमको चाहा है
सुन रक्खा है मैंने गौहर मिलते हैं गहराई में

हमको इक दूजे से मोहब्बत है यह तो जग-ज़ाहिर है
इक का चेहरा दिखता हो जब दूजे की परछाई में

कोई भी ऐतिराज़ नहीं है लानत देना है तो दो
लेकिन तुम सच जानोगे जब बैठोगे तन्हाई में

तुम जब ग़ुस्सा करते हो तो सुकून और बढ़ जाता है
जैसे कि धूप तेज़ हो और हम बैठे हों अमराई में

यूँ तो कहने को लम्हे भर की बे-वफ़ाई की उसने
लेकिन उम्र लगेगी अब इस धोके की भरपाई में

दोष नहीं है तेरा कुछ भी धोका मिलता रहता है
अच्छा-ख़ासा नक़्स रहा है बचपन से बीनाई में

●●●

●

हल्की सी आहट भर से दिल का दरवाज़ा खुलता था
एक ज़माना वो भी था जब मुझ पे पूरा खुलता था

थोड़ी खट-पट होती है तो दीवारें उठ जाती हैं
पहले बातें होती रहती थीं तो रस्ता खुलता था

जब से उसने इश्क़ किया है तब से दरिया बहता है
पहले आँखों में से जन्नत का दरवाज़ा खुलता था

बिन चिट्ठी-बिन तार के आते जाते थे तब संदेशे
उसने खिड़की गर खोली तो मेरा कमरा खुलता था

अच्छे से जाना करती थी वो कि मुझे क्या भाता है
मुझसे नज़रें टकराएँ तो उसका जूड़ा खुलता था

●●●

उसको गर पहचाना होता तो उलझाव नहीं होता
वो तो दरिया था और दरिया में ठहराव नहीं होता

वो भरमाएगा उसकी यह फ़ितरत तो जग-जाहिर थी
मैं ख़ामोश अगर रह जाता तो टकराव नहीं होता

कोई वाजिब कारण होता तो उससे करता हुज्जत
साथ सफ़र करने वालों में क्या अलगाव नहीं होता

जिस्म तो इक जंगल है जिसमें अच्छे-अच्छे भटके हैं
रूह मिरी गर मंज़िल होती तो भटकाव नहीं होता

दिखने-विखने पर मत जाओ हम तो पागल-वागल थे
ऐसी बातों पर लड़ बैठे जिन का भाव नहीं होता

सबको ख़ुश रखने में हमने कोई कसर नहीं छोड़ी
हम दरियाओं से अच्छा फिर भी बरताव नहीं होता

एक अकेले तुम थोड़ी हो ग़लती सब से होती है
आगे लोग बढ़ेंगे वो जिन से दुहराव नहीं होता

•••

●

हमने सोचा कि किसी और को पुकारा होगा
आपको नाम कहाँ याद हमारा होगा

तुम दिलासा तो दिलाती हो मगर शक है मुझे
इस जहाँ में कोई और तुम सा ही प्यारा होगा

सोचना तुमको अगर मुझसे मोहब्बत है तो
ग़ैर के साथ मेरा दिखना गवारा होगा

दिल तो कहता है मगर कैसे भरोसा कर लें
ख़ुद का जो हो नहीं पाया वो हमारा होगा

याद रखना कि मोहब्बत का समुंदर है ये
पास दिखता है मगर दूर किनारा होगा

●●●

●

पत्थर से टकराएगा सर और होगा क्या
इश्क़ के खेल में जाऊँगा मर और होगा क्या

आईना तो दिखला कर जाऊँगा उसको
होगा नहीं वो मुझे मयस्सर और होगा क्या

साथ हसीं चेहरों के रहना है मुझ को तो
दिल मेरा भी होगा पत्थर और होगा क्या

छोड़ो मेरी चिंता जाना है तो जाओ
बन जाऊँगा मैं भी क़लंदर और होगा क्या

तेरे बिन मुश्किल है लेकिन कोशिश कर लूँ
होगा नहीं मुकम्मल मंज़र और होगा क्या

●●●

●

जानता था कि तुम दग़ा दोगी
क्यूँकि तुम कहती थी वफ़ा दोगी

आपकी तरह ही हसीन है वो
अपना काजल उसे लगा दोगी

एक झटके मैं झुक गई तुम तो
और तुम मुझको हौसला दोगी

उम्र भर आपको दुआ दूँगा
अच्छे ग़म-ख़्वार का पता दोगी

जिस्म तक इसलिए नहीं पहुँचा
ज़िंदगी भर मुझे दुआ दोगी

●●●

●

आजकल हिचकियाँ नहीं आती
इसलिए चिट्ठियाँ नहीं आती

जब से पंखे उतार फेंके हैं
स्टूल और रस्सियाँ नहीं आती

हम तो फ़ौरन हिसाब करते हैं
इसलिए फब्तियाँ नहीं आती

राह पुल ने बहुत कठिन कर दी
तट पे अब कश्तियाँ नहीं आती

सबके कमरे अलग-अलग हैं अब
इसलिए सिसकियाँ नहीं आती

इसलिए गुल उदास बैठे हैं
देखने तितलियाँ नहीं आती

●●●

●

एक बर्बाद कहानी का वो हिस्सा न बने
इसलिए चाहता हूँ मैं कि वो मेरा न बने

मशवरा मुफ़्त है पर काम बहुत आएगा
ध्यान रखना कोई ख़ुश्बू लिए चलता न बने

मेरी ग़लती नहीं थी फिर भी मु'आफ़ी माँगी
मेरी कोशिश है कि इज़्ज़त का तमाशा न बने

मैं बताता नहीं किस तरह हुआ हूँ बर्बाद
साथ मेरे ही सफ़र ख़त्म हो रस्ता न बने

मान ले दिल मेरा कहना कि मोहब्बत मत कर
ज़िंदगी ताकि नए दर्द का दरिया न बने

●●●

●

ठहर आँखों में जाना चाहता हूँ
नज़र हर पल मैं आना चाहता हूँ

तवाइफ़ से चुरा लाया हूँ घुँघरू
अमीरी को नचाना चाहता हूँ

बुरा इस वजह से लगता नहीं है
मैं रिश्ते को निभाना चाहता हूँ

मुझे गहराई उसकी देखनी है
मैं उसको वरग़लाना चाहता हूँ

कहीं पर भी मुझे दफ़ना न देना
मैं लफ़्ज़ों में समाना चाहता हूँ

●●●

●

मुझे तेरा चेहरा दिखाई दिया
मुझे लंबा रस्ता दिखाई दिया

सुनहरे वो शादी के जोड़े में थी
मुझे रंग काला दिखाई दिया

सुनाता रहा बस सुना कुछ नहीं
मुझे शाह बहरा दिखाई दिया

मुझे अपनी नेकी डुबानी पड़ी
मुझे एक दरिया दिखाई दिया

मेरे दोस्त की थोड़ी तारीफ़ की
मुझे पर ज़ियादा दिखाई दिया

ललक इसलिए भी ज़ियादा जगी
मोहब्बत पे पहरा दिखाई दिया

●●●

●

फूल जब कुछ किताब से निकले
ढेर लम्हे गुलाब से निकले

जिस्म निकला है निकली हैं साँसें
हम कहाँ तेरे ख़्वाब से निकले

ज़िंदगानी की झील में झाँका
ढेर किरदार आब से निकले

पूछ कर लग रहा है ग़लती की
प्रश्न ढेरों जवाब से निकले

इस तरह मेरी मौत को टाला
धीरे-धीरे नक़ाब से निकले

इक नज़र आपकी गिरी मुझ पर
रात दिन सारे ख़्वाब से निकले

●●●

●

यह नहीं कहता कि तुम दिल से मिटा दो मुझको
जब तलक लौट नहीं आता भुला दो मुझको

तुमने जब जान लिया है कि मैं इक क़तरा हूँ
इल्तिजा है कि समुंदर से मिला दो मुझको

जानता हूँ कि मेरा तुमसे बिछड़ना तय है
इक मोहब्बत की कहानी में छुपा दो मुझको

मुझसे देखी नहीं जाती है ये सूनी दुनिया
मैं हूँ इक शम्'अ मोहब्बत की जला दो मुझको

मैंने चाहा था बस इतना कि मिला दो उससे
चाहा कब था उसी के जैसा बना दो मुझको

●●●

●

तेरी और उसकी कहानी खोल सकता हूँ
मैं मोहब्बत के म'आनी खोल सकता हूँ

आपको थोड़ी मुझे यह फ़ख़्र हासिल है
सामने सबके जवानी खोल सकता हूँ

मेरे बच्चे जब हुए तब अक़्ल आई है
अब पिता होने के मा'नी खोल सकता हूँ

सच छुपाना है तो मुझको मार दो गोली
मैं कभी भी यह कहानी खोल सकता हूँ

●●●

●

शजर जिस पे मैं रहता हूँ उसे काटा नहीं करता
मैं 'आतिश' मुल्क से सपने में भी धोका नहीं करता

बनाते कैसे हैं मिट्टी से सोना मुझ को आता है
मगर मैं दोस्तो ऐसा कोई दावा नहीं करता

भुला देते हैं लोग अक्सर मोहब्बत में किए वा'दे
तभी तो जान मैं तुम से कोई वा'दा नहीं करता

मैं इक बूढ़ा शजर जिस को जवाँ रक्खा परिंदों ने
तभी तो मैं परिंदों से कोई शिकवा नहीं करता

उड़ानें देखनी हैं गर तो मेरी शा'इरी देखो
परिंदा हूँ मैं पर ऐसा कभी दावा नहीं करता

●●●

●

इश्क़ से दिल को ऊबा देखा
जिस्म का जब से सौदा देखा

भूका हम ने राजा देखा
सागर को भी प्यासा देखा

दुनिया देखी कब बच्चों ने
सी सी प्लस प्लस जावा देखा

उम्मीदें माँ बाप की देखीं
बच्चों का जब बस्ता देखा

शाही पथ का लालच मत कर
सच्चा रस्ता कच्चा देखा

बदल के देखा हम ने फिर भी
राजा लेकिन बहरा देखा

तू प्यारा है क्यूँ कि मैं ने
तुझ में अपना साया देखा

बात अगर चुभ जाए 'आतिश'
वार उस का फिर गहरा देखा

●●●

●

उल्फ़तों का ख़ुदा नहीं हूँ मैं
रंज-ओ-ग़म से जुदा नहीं हूँ मैं

एक अर्सा हुआ गए उस को
अब तो उस का पता नहीं हूँ मैं

कलयुगी सोच से हूँ मैं दूषित
कोई ताज़ा हवा नहीं हूँ मैं

बे-वफ़ा बा-वफ़ा नहीं होगा
इश्क़ की कीमिया नहीं हूँ मैं

धर्म और ज़ात की जकड़ ऐसी
पर तो हैं पर उड़ा नहीं हूँ मैं

●●●

●

बात बच्चों की थी लड़ने को सियाने निकले
फिर अजब क्या है कि बच्चे भी लड़ाके निकले

ध्यान माँ रखती थी अपना वो ज़माने निकले
है यूँ अब रोज़ सवेरे से कमाने निकले

आम के बाग़ से जब से हैं परिंदे ग़ाएब
बा'द उस के कहाँ फिर आम रसीले निकले

पोटली जिस के लिए लड़ती रहीं औलादें
माँ की उस पोटली में सिर्फ़ झरोके निकले

ये तो कल-युग है खरा इस में नहीं हैं कोई
मुझ को शिकवा नहीं सिक्के मिरे खोटे निकले

फिर ग़रीबों की शिकायत का ख़ुदा हाफ़िज़ हैं
जब वज़ीरों के अमीरों ही से रिश्ते निकले

गर्द जब साफ़ हुई सब ने ये मंज़र देखा
जो नज़र आते थे ऊँचे वही बौने निकले

इब्तिदा फिर से है एक और सफ़र की 'आतिश'
बा'द मरने के भले पैरों से जूते निकले

●●●

●

राह जब भी तवील हो जाए
हर क़दम एक मील हो जाए

लटके रहना सलीब पर तय है
ज़िन्दगी जब वकील हो जाए

ख़ुशनुमा ख़्वाब आयेगा तय हो
दिन कभी जब तवील हो जाए

एक मुद्दत से आस है 'आतिश'
इश्क़ उसको भी फ़ील हो जाए

हौसला गर जवाँ रहे 'आतिश'
उम्र फिर तो तवील हो जाए

●●●

●

हर पल हँसता गाता है
जीना उसको आता है

बीते को बिसराता है
दरिया बहता जाता है

चाहत कर ली दो-तरफ़ा
उसको कहना आता है

मायूसी क्यों होनी थी
सोना पहना जाता है

कोरोना कब हारोगे
तरकश रीता जाता है

●●●

●

कोशिशें कर लो मैं बादल नहीं होने वाला
बरसूँ बे-वज्ह यूँ पागल नहीं होने वाला

शर्त ये है कि हमारे ही तरह हो जाओ
यार सोना हूँ मैं पीतल नहीं होने वाला

ख़्वाब टूटा तो नया ख़्वाब दिखाते क्यूँ हो
ख़्वाब ये भी तो मुकम्मल नहीं होने वाला

चाहिए पेड़ उगाने के अलावा भी कुछ
बाग़ पेड़ों से तो जंगल नहीं होने वाला

टोटके आप भले ढेर करा लें लेकिन
आप 'ऐबी हैं तो मंगल नहीं होने वाला

●●●

●

ज़रूरी लगता है तो बे-वफ़ाई की जा सकती है
मोहब्बत की क़फ़स से यूँ रिहाई दी जा सकती है

बहुत गर्मी हो बारिश हो तो छाते याद आते हैं
ज़रूरी हो तो रिश्तों की दुहाई दी जा सकती है

मैं रिश्तों की या वा'दों की दुहाई दूँ भी तो कैसे
ख़ुशी मिलती हैं तो फिर बे-वफ़ाई की जा सकती है

बहुत दिन से है पिंजरे में, ये लम्बा उड़ नहीं सकता
इसी कारण परिंदे को रिहाई दी जा सकती है

●●●

●

सुनता कब है वो कहानी को कहानी की तरह
जज़्ब मिट्टी में वो हो जाता है पानी की तरह

एक और वजह है जिस वजह से भाती हो मुझे
तुम सुनाती हो कहानी मेरी नानी की तरह

मत तलाशो किसी किरदार में अपनी ख़ुशबू
तुम कहानी को सुनो यार कहानी की तरह

आपको सूट पुराना ही पहन आना था
दूसरे रंग नहीं फबते हैं धानी की तरह

●●●

मैं उसूलों में कोई ढील नहीं कर सकता
दोस्ती इश्क़ में तब्दील नहीं कर सकता

इसलिए इश्क़ तेरा फ़ील नहीं कर सकता
क्यूँकि आँखों को तेरी झील नहीं कर सकता

बे-वफ़ाओं को वफ़ा मिल नहीं सकती जानाँ
क़ुदरती बात है तब्दील नहीं कर सकता

एक मुद्दत भी गुज़र जाये तो भरते नहीं हैं
रूह के ज़ख़्म कोई हील नहीं कर सकता

●●●

●

शाम को रोज़ बुलंदी से उतर आते हैं
जो परिंदे हैं वो तो लौट के घर आते हैं

उम्र भर साथ निभाने को कोई कहता है
तब मोहब्बत में अगर और मगर आते हैं

उनको व्यापार ही व्यापार नज़र आता है
लोग जो जिस्म की गलियों से गुज़र आते हैं

बे-वफ़ाओं की बताता हूँ अनूठी पहचान
वे ज़ियादा ही वफ़ादार नज़र आते हैं

●●●

●

माँ के रहने से ही पत्थर पे असर होता है
झोपड़ी हो या क़िला तब कहीं घर होता है

तरबतर कोई दुआओं से अगर होता है
हर किसी के लिये वो शख़्स शजर होता है

तब्सिरा फूल नहीं करता कभी ख़ुश्बू का
इश्क़ ऐलान नहीं करता अगर होता है

गुल खिला होता तो फिर वाह निकलना तय था
वाह तो मिलती ही है शे'र अगर होता है

●●●

●

भोर होने को है हर रात को यूँ समझा है
मुश्किलों से भरे हालात को यूँ समझा है

शांत इस तरह ही होती है पहाड़ी नद्दी
हर उबलते हुये जज़्बात को यूँ समझा है

मेरा किरदार कहानी में अभी है ज़िंदा
बाद मुद्दत की मुलाक़ात को यूँ समझा है

इम्तिहानों के लिये ज्ञान मिला है 'आतिश'
ज़िन्दगी में मिली हर मात को यूँ समझा है

●●●

●

मेरा सागर ख़यालों का किधर जाता है समझो
मेरे चेहरे पे वो चेहरा उभर आता है समझो

किसी का बे-वफ़ा होने का मंसूबा नहीं था
मोहब्बत का चढ़ा दरिया उतर जाता है समझो

तुम्हारे कंधे पर कुछ दिन से तितली बैठती है
मोहब्बत हो गई है यह नज़र आता है समझो

परिंदों को बताने की ज़रूरत भी नहीं है
परिंदा ख़ुद बुलंदी से उतर आता है समझो

●●●

●

बहुत पेपर पे छपने हैं तो ठप्पा काट लेते हैं
पिताजी मर गये हैं तो अंगूठा काट लेते हैं

मुकम्मल हो नहीं पाया वो हिस्सा काट लेते हैं
कहानी से मोहब्बत वाला क़िस्सा काट लेते हैं

हमारे हाथ के पोरों पे कोई घाव क्या देता
हमीं हैं वे जो नाख़ूनों को गहरा काट लेते हैं

मोहब्बत के महीने को अकेले जब निकाला है
तुम्हारी ज़िंदगी से यह महीना काट लेते हैं

●●●

●

भला कब मैं निशाने पर नहीं आया
मेरे हाथों में पर पत्थर नहीं आया

मैं तौबा दोस्ती से कर तो लूँ लेकिन
हमेशा पीठ पे ख़ंजर नहीं आया

कहीं ठहरे नहीं फिर भी शिकायत है
सफ़र में ख़ुशनुमा मंज़र नहीं आया

मोहब्बत को निभाया उम्र भर उसने
मोहब्बत में कभी अंतर नहीं आया

●●●

●

मुसलसल कहाँ ग़म मयस्सर हुये
मुझे तुम बहुत कम मयस्सर हुये

मोहब्बत में तुमने कमी की नहीं
मुझे ज़ख़्म हरदम मयस्सर हुये

हूँ हीरा मगर क़द्र कुछ भी नहीं
यूँ ही जो उसे हम मयस्सर हुये

मोहब्बत की बारिश छमा-छम हुई
मुझे ग़म झमाझम मयस्सर हुये

●●●

●

पीठ पीछे बुरा नहीं कहता
बरमला बे-वफ़ा नहीं कहता

तुम जुदा पूरे हो नहीं पाये
इसलिये मैं ख़ुदा नहीं कहता

यह पता आज भी उसी का है
ख़ुद को मैं बे-पता नहीं कहता

दोस्त हो कह के टाल देता है
इस तरीक़े से क्या नहीं कहता

●●●

●

अलग हूँ सब से पर कम-तर नहीं हूँ
दिलों में हूँ कोई बे-घर नहीं हूँ

मेरी तौहीन तुम कैसे करोगे
मैं कब से जिस्म के अंदर नहीं हूँ

हमारा साथ इक संयोग है बस
सफ़र में हूँ मैं भी रहबर नहीं हूँ

रहूँगा सामने आँखों के हर-दम
गुज़र जाए जो वो मंज़र नहीं हूँ

●●●

●

सच को जानेंगे तह देखेंगे
कौन फ़सादी है यह देखेंगे

इससे पहले हम झंडा थामें
मक़्सद किसका क्या यह देखेंगे

चल देंगे यूँ ही पागल हैं क्या
रस्ता सच्चा है यह देखेंगे

शान से लहरे भारत का परचम
पक्का हो यह हम यह देखेंगे

●●●

●

ये पक्का है की झूटा प्यार करते हैं
मोहब्बत जो सरे-बाज़ार करते हैं

मोहब्बत में अना पर कौन लेता है
चलो इक बार फिर इज़हार करते हैं

मोहब्बत में बिछड़ जाना ही अच्छा है
यही इक फ़ैसला हर-बार करते हैं

मोहब्बत और दारू एक सी मानो
सभी पहले पहल इंकार करते हैं

●●●

●

मेंढकों को नाल ठोके जा रहे हैं
दम पे इन के ताल ठोके जा रहे हैं

हाँ मिलेंगे उच्च गुणवत्ता के दूले
गंजियों पे बाल ठोके जा रहे हैं

मुल्क चाहे गर्त में जाए तो जाए
अपने-अपने ताल ठोके जा रहे हैं

ख़ुश-नुमा माहौल बनना तय है 'आतिश'
हाथ पर झप-ताल ठोके जा रहे हैं

●●●

●

मोहब्बत मुझसे है तो एक वा'दा कर
मुझे चाहो न चाहो ख़ुद को चाहा कर

तेरी ख़ूबी में अक्सर भूल जाता हूँ
कभी हीरा कभी पत्थर पुकारा कर

दुआएँ भी नहीं और राह पथरीली
सफ़र कर पर हवा का रुख भी देखा कर

अगर भरना है तो भर लो उड़ान ऊँची
मगर कंधों से पहले बोझ हल्का कर

●●●

●

हमें इक रंग की तस्वीर पहना दी
कहा कंगन है और ज़ंजीर पहना दी

बताया यह था की जन्नत में भेजेंगे
किसी आतंकी की तक़दीर पहना दी

तुम्हारा काम है ख़ुश्बू को फैलाना
लुभाया यूँ था पर शमशीर पहना दी

हमें ग़म-ख़्वार भी ऐसा मिला 'आतिश'
सुना कर दर्द ख़ुद की पीर पहना दी

●●●

कहाँ तुम मुल्क के दुश्मन को दहशत-गर्द कहते हो
उलट कहना है इस कारण उसे हमदर्द कहते हो

तुम्हारे शोर में पीड़ा हमारी कौन सुन पाता
ग़ज़ब हो रात-दिन चिल्ला के झूटा दर्द कहते हो

शिकायत चीख़ कर करने से हासिल कुछ नहीं होगा
पता है आदतन तुम तो हरे को ज़र्द कहते हो

हमेशा से तिलक बन कर ये माथे पर विराजे हैं
बहुत पावन हैं ये रज-कण जिसे तुम गर्द कहते हो

●●●

●

जो हल सोचा था वो निकाला गया है
कई बार सिक्का उछाला गया है

मेरे शे'र ख़ारिज हुये एक मुद्दत
समुंदर से गौहर निकाला गया है

यहाँ लड़कियाँ दो हैं और एक चॉइस
मुझे सिक्के जैसा उछाला गया है

वहाँ रौशनी की ज़रूरत है 'आतिश'
जहाँ से ये पत्थर उछाला गया है

●●●

●

जश्न की वजह यार देता हूँ
हौसला हूँ बहार देता हूँ

हाँ तेरा इंतिज़ार कर लूँगा
यूँ ही घंटों गुज़ार देता हूँ

जब भी तन्हा हो तो चले आना
वक़्त अपना उधार देता हूँ

गर तुम्हें जिस्म तक पहुँचना है
मैं भी चेहरा उतार देता हूँ

●●●

●

गाँव के लड़के पे मरती थी
लड़की वैसे दिल्ली की थी

इश्क़ में सुध-बुध खो बैठी है
जादू टोना जो करती थी

छल ने बदली उसकी सीरत
पहले वो इक-दम भोली थी

बादल उतने बरसे 'आतिश'
जितनी उनमें मायूसी थी

●●●

●

इक खुला आसमान देना है
हर किसी को उड़ान देना है

एक के बाद दूसरा पर्चा
उम्र भर इम्तिहान देना है

दिल में इतनी जगह तो दो जानाँ
तुम को अपना जहान देना है

चाहे तुम हो या बे-ज़वाँ कोई
हर किसी को अमान देना है

●●●

●

फ़ोन पर तब तो बात होती थी
तेरे चुम्बन से रात होती थी

तुम तो माहिर थे खेल में जानाँ
मेरी हर बार मात होती थी

दिल को ख़त में उकेर पाते थे
तब क़लम और दवात होती थी

याद है जब क़रीब थे हम तुम
रात के बाद रात होती थी

●●●

●

सज़ा दे सकते हो जानाँ जुदाई के अलावा भी
कई भूलें हुई हैं बे-वफ़ाई के अलावा भी

मोहब्बत को मुकम्मल करने का रस्ता कठिन होगा
कई चीज़ें लगेंगी हमनवाई के अलावा भी

बहुत मजबूर हूँ वरना बिछड़ता ही नहीं तुमसे
बहुत सारी हैं वजहें बे-वफ़ाई के अलावा भी

पढ़ा सकती है वो तो बे-वफ़ाई को वफ़ाई में
हुनर उसमें कई हैं बे-वफ़ाई के अलावा भी

●●●

●

सबकी आँखों का ख़्वाब होना है
मुझको महँगी शराब होना है

आप लोगों के साथ रह पाऊँ
मुझको इतना ख़राब होना है

हारना पक्का है मोहब्बत का
इश्क़ को कामयाब होना है

जान लो मेरे होने का मतलब
माँ की आँखों में ख़्वाब होना है

●●●

●

सब्र की सीमा को यूँ परखा गया था
वो विरोधी की तरह मुझ से मिला था

दी मोहब्बत तो मोहब्बत ही मोहब्बत
अब मुसलसल बे-वफ़ाई दे रहा था

छोड़ने की वज्ह यह बिल्कुल नहीं थी
अस्ल में दीवानगी से वो ख़फ़ा था

बे-वफ़ाई की गवाही ख़ुद दी उसने
कुछ ज़ियादा ही सफ़ाई दे रहा था

●●●